Research Journal of Language, Literature and Humanities _____________________________E-ISSN 2348-6252
Vol. **12(4),** 5-11, September **(2025)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

नगरीय समाज कीकार्यशील महिलाओं के जिंदगी में उत्पन्न समस्याएँ: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा नगर की कौशल पुर बस्ती का एक वैयक्तिक अध्ययन)

नंदिनी* एवं लजवंत संह
समाजशास्त्र एवं राजनीति वज्ञान वभाग, सामाजिक वज्ञान संकाय, दयालबाग शक्षण संस्थान (डीम्ड टू वी यूनिव र्सटी), दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत
nandinidei120081@dei.ac.in

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 31st May 2025, revised 4th July 2025, accepted 10th August 2025

सारांश

कार्यशील महिला शब्द का तात्पर्य घर से बाहर नौकरी करने वाली महिला के संदर्भ में लया जाता है। वर्तमान समय में महिलाएं घर परिवार के साथ-साथ बाहर के क्षेत्र में भी अपनी भू मका अदा कर रही हैं। वह अब केवल वद्यालयों, वश्व वद्यालयों तथा कार्यालयों में कार्य करने तक ही सी मत नहीं रहीं बल्कि उदद्योग-धंधों,कारखानों, न्यायालयों, प्रशासन, राजनीति तथा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में भी कार्य कर रही हैं।कार्यशील महिलाएं आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रही हैं।आत्मनिर्भरता के साथ-साथ उनके सामने दोहरी भू मका निर्वाह की सबसे बड़ी समस्या सामने आती है। महिलाओं को नौकरी के साथ-साथ घर परिवार तथा बच्चों की भी पूरी ज़िम्मेदारी उठानी पड़ती है। इस प्रकार महिलाएं अपने घर के संचालन के लए कसी भी प्रकार की नौकरी कर लेती हैं जिनके बदले उन्हें कभी-कभी कम वेतन भी प्राप्त होता है। इसी के साथ-साथ महिलाओं को एक साथ दोहरी जिंदगी जीनी पड़ती है तथा वह व भन्न समस्याओं का सामना कर रही हैं। इन समस्याओं में पारिवारिक समस्याएँ, कार्य स्थल की समस्याएँ, निजी समस्याएँ आदि का सामना रोजमर्रा की जीवन शैली में शा मल होता है।

प्रमुख शब्द: नगरीय समाज, कार्यशील महिलाएं, समस्याएँ, समाधान

प्रस्तावना

नगरीय समाज से हमारा तात्पर्य ऐसे समाज से होता है, जहां कसी बड़े क्षेत्र में अ धकांश व्यक्ति गैर कृ ष कार्य करते हैं तथा जी वकोपार्जन करते हैं। जिनके बीच औपचारिकता प्रतिस्पर्धा तथा द् वतीयक संबंध पाये जाते हैं उन्हें नगरीय समाज की संज्ञा दी जाती है। दुर्खीम के अनुसार, "नगर एक ऐसा समाज है, जिसके सदस्य सावयवी एकता के द्वारा आपस में बंधें हुए हैं"[1]। लुईसवर्थ के अनुसार, "नगरीय समुदाय को सामाजिक व भन्नता वाले व्यक्तियों के एक बड़े तथा घने बसे हुए स्थायी क्षेत्र के रूप में परिभा षत कया जा सकता है"[1]। कार्यशील महिलाओं को जानने के लए हमें अपने मूल ढांचे की ओर लौटना पड़ेगा। इतिहास की जड़ों में जाना होगा। आदिम युगीन समाज में भी महिलाएं कसी न कसी प्रकार के कार्य में व्यस्त रहती थीं। आखेट युग में जब महिलाएं शकार करने नहीं जाती थीं, तब वे अनेक प्रकार के घरेलू काम धंधों को करती थीं। जैसे बांस की चीजें बनाना, ह थयार बनाना, घरेलू सामान बनाना आदि। पशु पालन और कृ ष युग में महिलाओं के कार्य क्षेत्र में वकास हुआ। वे घर के साथ-साथ कृ ष कार्य में अपना योगदान देती थीं। डॉ राधाकमल मुखर्जी ने लखा है क प्राचीन काल में महिलाओं को कपड़ा रंगने, कसीदा काढ़ने आदि कार्य में मजदूरी पर लगाया जाता था[1]। कार्यशील महिलाओं की स्थिति में जो बहुत बड़ा परिवर्तन आया है, वह औद्यो गक क्रांति के पश्चात आया है। कृ ष समाज में रोजगार, काम आदि के अवसर बहुत कम थे। औद्यो गक समाज में महिलाओं को काम के असंख्य अवसर प्राप्त हुए। डॉ प्र मला कपूर के शब्दों में, "शहर के उच्च और मध्य वत्त वर्गों

की श क्षत कार्यशील महिलाओं का उदीयमान समुदाय हमारे समाज का अपेक्षाकृत एक नया पहलू है, जिसकी ओर सामान्य लोगों और वद्वानजनों का ध्यान आक र्षत हो रहा है। इस समुदाय का अपने आप में उन महत्वपूर्ण परिवर्तनों का संकेत एक संकेत है, जो हमारे देश के सामाजिक-आ र्थक तथा राजनीतिक-कानूनी जीवन में घटित हो रहा है’[2]। कार्यशील महिला शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिलाओं के संदर्भ में कया जाता है अर्थात वे महिलाएं जो बाहर निय मत रूप से आ र्थक और व्यावसायिक गति व धयों में व्यस्त रहती हैं। कार्यशील महिला शब्द उन स्त्रियों के लए प्रयोग कया जाता जाता है जो वेतन प्राप्त कार्य करती हैं। काम करने का तात्पर्य स्वयं काम करना ही नहीं, दूसरे व्यक्तियों से काम लेना भी है तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन देना भी कार्य की श्रेणी में सम्मि लत होता है। आज के समय में जब भारतीय नारी के लए कार्यशील शब्द का प्रयोग कया जाता है तो वह केवल वद्यालयों, वश्व वद्यालयों तथा कार्यालयों में सहज सरल ढंग से कार्य करने वाली महिलाओं तक ही सी मत नही हैं बल्कि उदद्योग धंधों, कारखानों में व व्यवसायों में भी कार्यक्षेत्र वस्तृत हो गया है।महिलाओं को सशक्त बनाने, उन्हें शक्षा का अ धकार तथा गरिमापूर्ण सुर क्षत जीवन दिये जाने की दिशा में भारत सरकार ने अनेक योजनाओं व कार्यक्रमों का संचालन कया। भारतीय संसद द्वारा भी महिलाओं के कल्याण और सुरक्षा हेतु कई कानून बनाए गए जिससे क श क्षत, जागरूक तथा प्रगतिशील महिलाओं को देश की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। भारत में महिलाएं पुरुषों के समान आय उत्पादन कार्य करके एक वेतन भोगी या कार्यशील स्त्री के रूप में देश के आ र्थक व सामाजिक वकास में बराबर सहायक बन रही हैं। महिलाएं आज काम और परिवार के बीच दोहरी भू मका का निर्वाह कर रही हैं।इस दोहरी भू मका के निर्वाह में महिलाएं व भन्न पारिवारिक तथा कार्य क्षेत्र के बीच समस्याओं का सामना कर रही हैं।

कार्यशील महिलाओं की वशेषताएँ

कार्यशील महिलाओं की वशेषताओं में दो क्षेत्रों की महिलाओं को शा मल कया गया है ग्रामीण कार्यशील महिलाएं तथा नगरीय कार्यशील महिलाएं। **i.** कृ ष से जुड़ी हुई कार्यशील महिलाएं अ श क्षत और कम पगार पर कार्य करती हैं।सामान्यतया ये दैनिक मजदूरी पर होती हैं[8]। ii. जब कृ ष का कार्य नहीं होता तो कुटीर उद्योग धंधे के कार्यों को भी करती हैं। हस्तकलाओं का कार्य करना, सूत कातना, ड लया बनाना[8]। iii. ग्रामीण महिलाएं पशुपालन एवं दुग्धोत्पादन के कार्य में सहायक हैं[8]। iv. बिलासपुरी महिलाओं द्वारा ईंटों को ढोना, गारा बनाना, बालू उठाना, ऊपरी मंजिल तक ढोकर ले जाना। v. घरों में बर्तन, झाड़ू, पोंछा, कपड़े धोना, बच्चों को पालना तथा खाना बनाना।

नगरीय समाज की कार्यशील महिलाओं की सामान्य चुनौतियाँ

नगर की महिलाएं संगठित और असंगठित क्षेत्रों में कार्य करती हैं। असंगठित क्षेत्र का तात्पर्य कामगारों के मध्य औपचारिक अनुबंधों के न होने से संगठन एवं कर्मचारियों के मध्य स्पष्ट सम्बन्धों का अभाव होता है। नगर की कार्यशील महिलाओं को व भन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके जीवन में अपने लए समय नहीं होता है। नौकरी पर जाने से पूर्व घर का सारा काम करना पड़ता है। वह सारा काम खत्म करने के पश्चात नौकरी करने जाती हैं। प्राइवेट मल, फैक्ट्री, कारखानों में मनचाहे रूप से इनका शोषण कया जाता है तथा कार्य के बदले वेतन भी कम दिया जाता है।

डॉ प्र मला कपूर का शोध कार्य इस संबंध में महत्वपूर्ण है, “जो महिलाएं कसी पुरुष उच्चा धकारी के मातहात काम करती हैं, उनके सामने यह समस्या है क क थत अ धकारी उन्हें कार्यकुशल कार्यकर्ता न मानकर सर्फ उन्हें स्त्री के रूप में ही देखता है।यदि वह उसकी प्रशंसा करे महिला कर्मचारी से नाजायज फायदा उठाना चाहेगा और यदि कहीं उसने अपने अ धकारी को प्रसन्न नहीं रखा, अपने काम में दिलचस्पी नहीं रखी तो उसके लए अपनी नौकरी बनाए रखना अथवा पदोन्नति पाना कठिन हो जाएगा’[2]।

समस्या कथन

कार्यशील महिलाएं वे महिलाएं होती हैं जो अपने श्रम के बदले में वेतन प्राप्त करती हैं तथा अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करती हैं। वैश्विक स्तर पर यदि देखा जाए तो महिलाएं व भन्न क्षेत्रों में अपनी अहम भू मका अदा कर रही हैं। भारत के संदर्भ में यदि देखा जाता हैं तो महिलाएं आज भी पछड़ी हुई हैं उनका शै क्षक स्तर भी कम हैं भन्न भन्न राज्यों में महिलाओं का शै क्षक स्तर भन्न- भन्न है, जहां केरल में महिलाएं अ धक श क्षत हैं, वहीं बिहार हरियाणा जैसे राज्यों में महिलाओं का शै क्षक स्तर निम्न पाया गया है। इस प्रकार महिलाएं अपने घर के संचालन के लए कसी भी प्रकार की नौकरी कर लेती हैं जिनके बदले उन्हें कभी-कभी कम वेतन भी प्राप्त होता है। इसी के साथ-साथ महिलाओं को एक साथ दोहरी जिंदगी जीनी पड़ती है

तथा वह व भन्न समस्याओं का सामना कर रही हैं। इन समस्याओं में पारिवारिक समस्याएँ, कार्य स्थल की समस्याएँ, निजी समस्याएँ आदि का सामना रोजमर्रा की जीवन शैली में शा मल होता है।

साहित्य पुनरावलोकन

संह, वी.एन. और संह, जनमेजय (2010) ने नारी को आधुनिकता से जोड़कर अध्ययन कया है इन्होनें भारत में कार्यशील महिलाओं की समस्याओं को उजागर कया है। इनका कहना है क भारत में कार्यशील महिलाओं पर लखने का मेरा उद्देश्य है क समकालीन भारतीय समाज में कार्यशील महिलाओं को कस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए[1]।

गुप्ता, सुभाषचंद्र (2016) इन्होनें भारतीय समाज के संदर्भ में कार्यशील महिलाओं की स्थिति का गहन अध्ययन कया है। लेखक का कहना है क कार्यशील महिलाओं को सामाजिक रूप से भी व भन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है।कार्य स्थल पर महिलाओं के साथ सामाजिक तथा शारीरिक रूप से उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है[3]।

तिवारी, एम. (2017) इनका शोध इस बात पर केंद्रित है क चमड़ा उद्योग में कार्यशील महिलाएं कस प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं से ग्र सत होती हैं। उन्होंने बताया क इस उद्योग में रासायनिक तत्वों और भारी उपकरणों का उपयोग होता है, जिससे महिलाओं को त्वचा संबंधी रोग, सांस लेने में कठिनाई, और थकावट जैसी समस्याएं होती हैं[5]।

जोशी, एन. (2020) ने अपनी पुस्तकमें यह स्पष्ट कया है क कार्यस्थल पर महिलाओं को मान सक, मौ खक और कभी-कभी शारीरिक उत्पीड़न का भी सामना करना पड़ता है। कई महिलाएं चुप रह जाती हैं क्यों क उन्हें नौकरी से हटाये जाने का डर होता है। उनका सुझाव है क हर औद्यो गक यूनिट में 'महिला शकायत प्रकोष्ठ' और लैं गक संवेदनशीलता प्र शक्षण अनिवार्य कया जाना चाहिए[4]।

अध्ययन के उद्देश्यः i . नगरीय समाज की कार्यशील महिलाओं की सामाजिक-आ र्थक स्थिति का अध्ययन करना। ii. नगरीय समाज की कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक समस्याओं का अध्ययन करना। iii. कार्यशील महिलाओं के समक्षकाम के स्थल पर उत्पन्न चुनौतियों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति :प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित होगा।इसमें कार्य कारण सम्बन्धों की व्याख्या की जाएगी। प्राथ मक तथा द् वतीयक स्रोतों का प्रयोग कया जाएगा।प्रस्तुत शोध के तथ्यों का प्रस्तुतीकरण सारणी के माध्यम से कया जाएगा।

अध्ययन क्षेत्र :प्रस्तुत अध्ययन आगरा नगर के दयालबाग क्षेत्र के कौशलपुर बस्ती के वशेष संदर्भ में है। आगरा नगर की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 4,418,797 है। जिसमें पुरुषों की जनसंख्या लगभग 2,364,953 है, और स्त्रियों की जनसंख्या 2,053,844 है। दयालबाग क्षेत्र की कौशलपुर बस्ती में लगभग 5000 लोग निवास करते हैं। जिनमें से 50 महिलाओं का चयन मैंने अपने शोध कार्य के लए कया है।

कार्यशील महिलाओं की सामाजिक-आ र्थक स्थिति

आज के आधुनिक युग में महिलाओं की भू मका केवल घर तक सी मत नहीं रही, बल्कि वे समाज के हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। शक्षा, च कत्सा, प्रशासन, वज्ञान, तकनीक, और व्यापार जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की स क्रय भागीदारी ने उनके सामाजिक और आ र्थक स्तर को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। कार्यशील महिलाओं की आ र्थक स्थिति में सुधार हुआ है, जिससे वे आत्मनिर्भर बनी हैं। अब वे परिवार की आय में योगदान देती हैं, बच्चों की शक्षा, स्वास्थ्य और भ वष्य को सुर क्षत करने में अहम भू मका निभाती हैं। हालाँ क, अभी भी कई सामाजिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। कार्यस्थल पर लैं गक भेदभाव, समान वेतन की कमी, यौन उत्पीड़न और पारिवारिक जिम्मेदारियों का दोहरा दबाव, महिलाओं की प्रगति में बाधा बनते हैं।

सारणी-1: उत्तरदाताओं की आयु एवं वैवाहिक स्थिति

आयु	उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति				योग
	ववाहित	अ ववाहित	वधवा	तलाक़ शुदा	
18 से कम	00	12	00	00	12
18-30 वर्ष	07	04	00	01	12
30-40 वर्ष	10	00	03	00	13

40 से अ धक	10	00	03	00	13
योग	27	16	06	01	50

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है क 18 से कम वर्ष के ववाहित उत्तरदाता 12 पाये गए तथा 18 से 30 वर्ष के 7 उत्तरदाता ववाहित, 4 उत्तरदाता अ ववाहित, 1 तलाक़शुदा पाये गए। 30 से 40 वर्ष के 10 उत्तरदाता ववाहित, 3 उत्तरदाता वधवा पाये गए है तथा 40 से अ धक वर्ष के 10 उत्तरदाता ववाहित, 3 उत्तरदाता वधवा पाये गए है।

सारणी-2: उत्तरदाताओं की मा सक आय तथा शै क्षक स्तर

शै क्षक	मा सक आय				योग
	5000 से कम	**5000-10000**	**10000-15000**	**15000 से अ धक**	
अ श क्षत	10	06	00	00	16
प्राथ मक	07	05	00	00	12
10 वीं पास	00	08	03	00	11
12 वीं पास	00	03	08	00	11
योग	17	22	11	00	50

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है क अ श क्षत वर्ग 10 उत्तरदाताओं की मा सक आय 5000 से कम है, 6 उत्तरदाताओं की मा सक आय 5000-10000 के बीच की है। प्राथ मक स्तर के उत्तरदाताओं में 7 उत्तरदाताओं की मा सक आय 5000 से कम है, 5 उत्तरदाताओं की मा सक आय 5000-10000 के बीच है।10 वीं पास उत्तरदाताओं में 8 उत्तरदाताओं की मा सक आय5000-10000 के बीच है तथा 3 उत्तरदाताओं की मा सक आय 10000-15000 के बीच है। 12 वीं पास उत्तरदाताओं में 3 उत्तरदाताओं की मा सक आय 5000-10000 के बीच है तथा 8 उत्तरदाताओं की मा सक आय 10000-15000 के बीच है। 15000 से अ धक मा सक आय वाले उत्तरदाताओं की संख्या भी शून्य है।

सारणी-3: पारिवारिक संरचना

क्रम संख्या	परिवार की संरचना	संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त परिवार	24	48%
2	एकांकी परिवार	26	52%
योग		**50**	**100%**

प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं में संयुक्त परिवार में रहने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 24 है तथा उनका प्रतिशत 48% है। एकांकी परिवार में रहने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 26 है तथा उनका प्रतिशत 52% है। इससे पता चलता है क अ धकांश उत्तरदाता एकांकी परिवार में रहते है।

सारणी-4: आय के स्रोत

क्रम संख्या	अन्य स्रोत	संख्या	प्रतिशत
1	पति की आय	10	20%
2	पता की आय	08	16%
3	पेंशन	12	24%
4	स्वयं	20	40%
योग		50	100%

सारणी से स्पष्ट होता है क आय के अन्य स्रोतों में पति की आय प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 10 है तथा उनका प्रतिशत 20% है तथा पता की आय प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 8 है तथा उनका प्रतिशत 16% है।पेंशन प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 12 है उनका प्रतिशत 24% है। स्वयं आय के स्रोत के रूप में उत्तरदाताओं की संख्या 20 है तथा उनका प्रतिशत 40% है।

सारणी-5 कार्य की प्रकृति

क्रम संख्या	कार्य की प्रकृति	संख्या	प्रतिशत
1	प्राइवेट कंपनी	12	24%
2	सरकारी नौकरी	00	00%
3	दूसरों के घरों में काम करना	20	40%
4	दिहाड़ी मजदूरी	14	28%
5	फल, सब्जी आदि बेचना	04	8%

योग	50	100%

उपर्युक्त सारणी से पता चलता है क प्राइवेट कंपनी में कार्य करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 12 है तथा उनका प्रतिशत 24% है। सरकारी नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या शून्य है। दूसरे घरों में काम करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 20 है तथा उनका प्रतिशत 40% है। दिहाड़ी मजदूरी करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 14 है तथा उनका प्रतिशत 28% है। फल तथा सब्जी बेचने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 4 है तथा उनका प्रतिशत 8% है। इस प्रकार स्पष्ट होता है क दूसरों के घरों में काम करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या अ धक है।

सारणी-**6**: समाज में हीन भावना से देखा जाना

क्रम संख्या	प्रति क्रया	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	36	72%
2	नहीं	14	28%
योग		50	100%

सारणी से स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं को हीन भावना से देखने पर उत्तरदाताओं की हाँ में प्रति क्रया का प्रतिशत 72% है तथा न में प्रति क्रया का प्रतिशत 28% है। इस प्रकार उत्तरदाताओं को तथा उनके काम को आज भी हीन भावना से देखा जाता है।

सारणी-7: परिवार के अन्य सदस्यों से सहायता मलना

क्रम संख्या	प्रति क्रया	संख्या	प्रतिशत
1	*हाँ*	22	44%
2	नहीं	28	56%
योग		50	100%

सारणी से स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं को परिवार के अन्य सदस्यों से सहायता मलने पर हाँ में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 44% है तथा न में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 56% है। स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं को पारिवारिक सहायता कम मलती है।

कार्यशील महिलाओं के समक्ष कार्य स्थल पर उत्पन्न चुनौतियां

आज की आधुनिक और प्रगतिशील दुनिया में महिलाओं की भागीदारी कार्यस्थलों पर निरंतर बढ़ रही है। वे व भन्न क्षेत्रों में अपने कौशल और प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं। ले कन इसके बावजूद कार्य स्थल पर कार्यशील महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके पेशेवर वकास और मान सक संतुलन को प्रभा वत करती हैं। सबसे प्रमुख चुनौती लैं गक भेदभाव है। महिलाओं को कई बार पुरुष सहयो गयों की तुलना में कम वेतन, कम प्रमोशन के अवसर और कम नेतृत्व की जिम्मेदारी मलती है। इसके अलावा, यौन उत्पीड़न एक गंभीर समस्या है, जो कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा और आत्म-सम्मान के लए खतरा बनती है। पारिवारिक और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखना भी एक बड़ी चुनौती है[6]। वशेषकर ववाहित महिलाओं या माताओं को ऑ फस और घर दोनों में बराबर जिम्मेदारी निभानी पड़ती है, जिससे तनाव और थकावट बढ़ती है।कई बार कार्यस्थलों पर महिलाओं की सहभा गता और निर्णय प्र क्रया में शा मल होने की स्वतंत्रता सी मत होती है, जिससे उन्हें अपनी बात कहने या नेतृत्व दिखाने के अवसर नहीं मलते।इन चुनौतियों के समाधान के लए कार्यस्थलों पर महिलाओं के लए सुर क्षत और समावेशी वातावरण, लचीले कार्य घंटे, सशक्त महिला हेल्पलाइन, और समान अवसरों की व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है। समाज और नियोक्ताओं को मलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए क महिलाएँ बिना कसी भेदभाव और भय के, अपने पेशेवर जीवन में आगे बढ़ सकें।

सारणी-**8**: कार्य के बदले कम वेतन मलना

क्रम संख्या	प्रति क्रया	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	23	46%
2	नहीं	27	54%
योग		50	100%

सारणी से स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं से कार्य अ धक लया जाता है तथा वेतन कम दिया जाता है इसमे हाँ में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 46% है तथा न में उत्तर देने

वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 54% है।इससे पता चलता है क उत्तरदाताओं को वेतन संबंधी कम समस्या है।

सारणी-**9**: कार्य स्थल पर मान सक शोषण

क्रम संख्या	प्रति क्रया	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	29	58%
2	नहीं	21	42%
योग		**50**	**100%**

सारणी से स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं का कार्य स्थल पर मान सक शोषण होने पर हाँ में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 58% है तथा नमें उत्तर देने वाले उत्तर दाताओं का प्रतिशत 22% है। स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं का कार्य स्थल पर मान सक शोषण कया जाता है।

सारणी-**10**: कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे

क्रम संख्या	कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी मत	आवृति	प्रतिशत
1	उपकरणों और मशीनों का सही उपयोग की कमी	**12**	24%
2	कार्यस्थल पर उ चत सुरक्षा उपायों की कमी	**08**	**16%**
3	सुरक्षा प्र शक्षकों का अभाव	**14**	**28%**
4	कार्यस्थल पर मान सक सुरक्षा की कमी	**16**	32%
योग		**50**	**100%**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है क उत्तरदाताओं द्वारा उपकरणों और मशीनों के सही उपयोग की कमी पर मत का प्रतिशत 24% है। कार्यस्थल पर उ चत सुरक्षा उपायों की कमी पर उत्तरदाताओं का प्रतिशत 16% है। सुरक्षा प्र शक्षकों के अभाव तथा कार्यस्थल पर मान सक सुरक्षा की कमी का प्रतिशत क्रमश 28% तथा 32% है।

सारणी-**11**: परिवार और कार्य जीवन में संतुलन की समस्या

क्रम संख्या	परिवार और कार्य जीवन में संतुलन की समस्या	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	**28**	**56%**
2	नहीं	**05**	**10%**
3	कभी-कभी	**12**	24%
4	कभी नहीं	**05**	**10%**
योग		**50**	**100%**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है क परिवार और कार्य के जीवन में संतुलन की समस्या के संबंध में हाँ में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 56% है तथा नहीं में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 10% है। कभी-कभी तथा कभी नहीं में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत क्रमश 24% तथा 10% है।

नगरीय समाज की कार्यशील महिलाओं की समस्याओं के निवारण के लए कए गए प्रयास: श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने कार्यशील महिलाओं के लए व भन्न सुरक्षात्मक प्रावधानों की सूची पेश की है। i. फैक्ट्री एक्ट 1948 के सेक्शन 22(2) के अनुसार कसी भी महिला को प्राइम मूवर (मूल गति उत्पादक) या कसी भी ट्रांस मशन मशीनरी के कसी भी भाग की सफाई या समायोजित करने की अनुमति नही होगी। सेक्शन 66(1)(बी) के अनुसार कसी भी महिला को कसी भी कारखाने में 6 बजे सुबह से लेकर शाम 7 बजे के बीच के समय के अलावा काम करने की अनुमति नहीं है[7]। ii. फैक्ट्री एक्ट 1984 के सेक्शन 27 द्वारा कॉटन प्रे संग के लए जिसमें कॉटन ओपनर काम कर रहा होता है, कारखाने में कसी भी भाग में महिला श्रम को प्रतिबं धत कया गया है[7]। iii. बीड़ी और सगार वर्कर एक्ट 1966 के सेक्शन 25 के अनुसार कसी भी महिला को 6 बजे सुबह से लेकर शाम 7 बजे के बीच के समय के औद्यो गक परिसर में काम करने की अनुमति नहीं है[7]। iv. माइंस एक्ट 1952 के सेक्शन 46(1) (बी) के अनुसार महिलाओं को कसी भी जमीन के ऊपरी खदान में 6 बजे सुबह से लेकर शाम 7 बजे के बीच के समय के अलावा काम करने की अनुमति नहीं है। तथा जमीन के नीचे के खान के कसी भी भाग में महिला श्रम को प्रतिबं धत करता है[7]। v. मातृत्व लाभ अ धनियम 1961 के अनुसार, बच्चे के जन्म से पहले और बाद में निश्चित प्रतिष्ठानों में निश्चित अव ध के लए महिला श्रम को नियंत्रित करता है और मातृत्व लाभ प्रदान करता है[7]।

परिणाम

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है क नगरीय समाज की कार्यशील महिलायें घर के बाहर जब कार्य करने निकलती हैं तो उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। महिलाएं घर का सारा काम खत्म करने के बाद अपनी नौकरी करने के लए निकलती हैं। 30 वर्ष से अ धक उम्र की महिलाएं ववाहित हैं तथा कार्यशील हैं।अध्ययन में पाया गया है क 16 महिलाएं ऐसी हैं जो अ श क्षत हैं और 5000 से कम तथा 5000 से 10000 के बीच महीने का कमा लेती हैं। 26 महिलाएं एकांकी परिवार में रहती हैं। 20 महिलाएं स्वयं की कमाई से घर का खर्चा चलाती हैं।अध्ययन में पाया गया है क 20 महिलाएं दूसरों के घरों में जाकर झाड़ू, पौंछा, बर्तन, बच्चों की देखभाल, खाना बनाना जैसे काम करती हैं।वर्तमान समय में महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रहीं हैं।पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मलाकर चल रही हैं ले कन अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है क आज भी महिलाओं को बाहर कार्य करने के लए हतोत्साहित कया जाता है और जो महिला समाज के नियम क़ानूनों को अनदेखा करके बाहर कार्य करने निकलती हैं तो उन्हें समाज के कुछ द क़यानूसी चंतक हीन भावना से देखते हैं अध्ययन से स्पष्ट होता है क 36 महिलाएं ऐसी हैं जो बाहर कार्य करने जाने पर उन्हें समाज द्वारा हीन दृष्टि से देखा जाता है। डी.एन. मजूमदार के शब्दों में परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक ही छत के नीचे रहते है, रक्त संबं धत होते है और स्थान, स्वार्थ और पारस्परिक आदान-प्रदान के आधार पर एक कस्म की चेतनता अनुभव करते है।एक महिला जब घर के बाहर कार्य करने की इच्छा जाहीर करती है तो परिवार के अन्य सदस्य या तो उसका समर्थन करने हैं तथा साथ देते हैं वहीं इसके वपरीत कुछ परिवार ऐसे होते हैं जो सर्फ महिलाओं को घर के कामों तक ही सी मत रखते हैं और उनका साथ भी नहीं देते हैं। एक कार्यशील महिला को परिवार के सदस्यों का कतना साथ मलता है यह अध्ययन से स्पष्ट होता है क 28 महिलाएं ऐसी हैं जिन्हें परिवार के अन्य सदस्यों से सहायता प्राप्त नहीं होती है। वह स्वयं ही अपने घर और बच्चों की देखभाल करती हैं, और बाहर भी नौकरी करती हैं।इसके साथ ही साथ महिलाओं को कार्य क्षेत्र पर भी व भन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनका शारीरिक तथा मान सक शोषण कया जाता है। 29 महिलाओं का कहना है क उनका कार्य स्थल पर मान सक शोषण कया जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है क भारतीय कार्यशील महिलाओ की स्थिति दो पाटों में फसे हुए धुन के समान हो गई है। उसे कार्यालय एवं घर दोनों जगह की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। यदि वह दोनों में संतुलन स्था पत करने में असमर्थ होती है तो उसे भारी निंदा का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार से प्रत्येक कार्यशील महिला का घरेलू जीवन दयनीय होता है। महिलाओं के वकास के लए उनका सामाजिक एवं आ र्थक वकास करना अत्यंत आवश्यकहै। कार्यशील महिलाओं को दोहरी भू मका निभाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आधुनिक युग में महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भू मका अदा कर रही हैं। महिलाओं को और अ धक आगे बढाने के लए उनका समर्थन करना अति आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. संह, वी. एन. और संह, जे. (2010). आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण. रावत पब्लिकेशन. जयपुर.पृष्ठ संख्या 58-61.
2. कपूर, पी. (2009). कार्यशील भारतीय नारी. राजपाल एंड संस. दिल्ली. पृष्ठ संख्या 45-46.
3. गुप्ता, एस. सी. (2016). कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज. अर्जुन पब्लिकेशन हाउस. दिल्ली. पृष्ठ संख्या 12-13.
4. जोशी, एन. (**2020**). कार्यस्थल पर महिला सुरक्षा और उत्पीड़न. रावत पब्लिकेशन. नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 154-156.
5. तिवारी, एम. (**2017**). औद्यो गक स्वास्थ्य और महिला श्रम. एसबीपीडी पब्लिकेशन. नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 78.
6. स्याल, एस. के. (2017). कार्यशील महिलाएं: समस्याएँ और समाधान. आत्माराम एंड संस. भरतपुर. पृष्ठ संख्या 22-25.
7. शर्मा, आर. और मश्रा एम. के. (2016). महिलाओं के कानूनी धा र्मक एवं सामाजिक अ धकार. रावत पब्लिकेशन. दिल्ली. पृष्ठ संख्या 36-37.
8. श्रीवास्तव, एन. औरझा, बी. के. (2017). कृ ष में महिलाओं की भू मका समस्या एवं निदान. **Retrieved June 11, 2025 from https://hindi.indiawaterportal.org/books/karsai-**

maen-mahailaaon-kaibhauumaikaa-samasayaa- evan-naidaana? utm